Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – 1

भाग – 1

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1.वर्ण, स्वर व व्यंजन	1
2.शब्द ज्ञान	13
3.तत्सम-तद्भव	16
4.संज्ञा	18
5.सर्वनाम	20
6.विशेषण	22
7.क्रिया	25
8.काल	27
9.लिंग	29
10.वचन	29
11.अव्यय	31
12.विदेशी भाषाओं के शब्द	34
13.संधि	37
14.समास	44
15.उपसर्ग	49
16.प्रत्यय	53
17.वाच्य	56
18.कारक	59
19.विराम चिन्ह और उनके प्रयोग	69
20.वाक्य	73
21.वाक्य रचना	81
22.वाक्य शुद्धि	85
23.शुद्ध वाक्य	87
24.मुहावरे	94

25.लोकोक्ति 105

26.पद्यांश 119

27.पाठ योजना 127

28.शिक्षण विधियाँ 135

29.चर्चा 154

30.मापन व मूल्यांकन 156

31.भाषा 163

वर्ण, स्वर व व्यंजन

⇒ उच्चरित रूप को ध्वनि कहते है।

⇒ उच्चरित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है।

⇒ ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते है लिखित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ जिस वर्ण के आगे कोई टुकड़े नही होते है उन्हे अक्षर कहते है।

⇒ अक्षर चार होते है – अ, इ, उ, ऋ

Note दो या दो से अधिक सार्थक वर्णो के समुहो को शब्द कहते है।

⇒ शब्द दो प्रकार के होते है – (1) सार्थक (2) निरर्थक

⇒ निरर्थक – नि: + अर्थक – विसर्ग सन्धि
⇒ निर + अर्थक – निरर्थक (संयोग)

चाय – वाय
खाना – वाना
पंखा – वखा

⇒ अर्थ की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई शब्द होती है।

⇒ दो या दो से अधिक सार्थक शब्दो के अर्थ समुहो को वाक्य कहते है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ भावों और विचारों की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई वाक्य है।

⇒ विद्वानों ने भाषा की पूर्ण परिपक्व इकाई वाक्य को कहा है।

1 ⇒ व्याकरण
2 ⇒ वैयाकरण – व्याकरण का भाग

सही शब्द ⇒ , प्रज्वल, प्रज्वलित, प्रोज्ज्वल

⇒ भाषा की सबसे बड़ी इकाई वाक्य को कहा जाता है।

⇒ कुल – योग   पैर में पूरा। (क्रम)
कूल – किनारा   सिर में आधा।। (कर्म)

वर्ण :-

⇒ सर्वप्रथम 'अ' वर्ण की उत्पत्ती हुई।
⇒ सभी वर्णों की उत्पत्ति शिवजी के डमरू से हुई।
⇒ वर्णों को लिपी चिन्ह कहते हैं
⇒ वर्णों की संख्या हिन्दी 44 होती है, हिन्दी मे कुल वर्णों की संख्या 52 होती है।

⇒ स्वर :– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ वर्णों के भेद - वर्णों के दो भेद होते हैं :-
⇒ स्वर (11) (2) व्यंजन (33)

⇒ स्वर :- जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तंत्रिकाओं में कम्पन, घर्षण, और बल नहीं लगाया जाता है उन्हें स्वर कहते हैं।

⇒ स्वर स्वतंत्र होते हैं। वृत्ति - स्वतंत्र
⇒ स्वरों के छः भेद होते हैं। वृत्ति - विज्ञान

(1) उच्चारण काल के आधार पर
(2) उच्चारण के आधार पर
(3) उत्पत्ति के आधार पर
(4) जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर
(5) ओस्ठाकृति के आधार पर
(6) मुखाकृति के आधार पर

1 उच्चारण काल के आधार पर स्वरों के भेद

⇓

⇓ ह्रस्व स्वर (ह्रस्व स्वर) ⇓ गुरु स्वर (दीर्घ स्वर)

| अ, इ, उ, ऋ | | आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ |

सही शब्द ⇒ ह्रस्व। ह्रदय - हृदय, ह्रद - तालाब

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1. ⇒ लघु स्वर :— जिन स्वरो के उच्चारण मे कम समय लगता है उन्हे लघु-स्वर कहते है।

⇒ लघु स्वरो की संख्या हिन्दी मे चार होती है :—
(अ, इ, उ, ऋ)

⇒ लघु स्वरो के अन्य नाम :—
(1) अधर स्वर (2) ह्रस्व स्वर
(3) नैसर्गिक स्वर (4) अखण्डित स्वर
(5) प्राकृतिक स्वर (6) मूल स्वर
(7) एक मात्रा वाले स्वर

⇒ लघु शब्द का विलोम गुरु होता है।
⇒ लघु + अ = लाघव ह्रस्व + अ = ह्रस्व
दीर्घ + अ = दीर्घ गुरु + अ = गौरव

2. गुरु स्वर ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे लघु स्वरो से दुगुना समय लगता है उन्हे गुरु स्वर कहते है।

⇒ हिन्दी मे गुरु स्वरो की संख्या सात है :—
(आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)

⇒ गुरु स्वरो के अन्य नाम —
(1) दीर्घ स्वर
(2) दो मात्रा वाले स्वर
(3) संयुक्त स्वर

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ (4) खण्डित स्वर
(5) मिश्रित स्वर
(6) संधि स्वर

⇒ ह्रस्व स्वरों के दो भेद :-
(1) समदीर्घ स्वर / सजातीय दीर्घ स्वर
(आ, ई, ऊ)
(2) विषम दीर्घ स्वर / विजातीय दीर्घ स्वर
[ए, ओ, ऐ, औ]

अ, आ, इ, ई

⇒ अ + अ = आ
इ + ई = ई
उ + ऊ = ऊ
— समजातीय दीर्घ स्वर

अ / आ + इ / ई = ए
अ / आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ए = ऐ
अ / आ + ओ = औ
— विषमजातीय दीर्घ स्वर

⇒ शब्दकोषीय क्रमानुसार स्वरों का सही क्रम
(ए, ऐ, ओ, औ)

⇒ पाणिनीय व्याकरणानुसार स्वरों का सही क्रम
(ए, ओ, ऐ औ)

⇒ शब्दकोषीय क्रमानुसार व्यंजनों का सही क्रम (य, र, ल, व)
⇒ पाणिनीय व्याकरणानुसार व्यंजनों का सही क्रम
(य, व, र, ल)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ उत्पत्ति के आधार पर स्वरो के भेद :-

- मूल स्वर — अ, इ, उ, ऋ
- संधि स्वर — आ, ई, , ए, ऐ, ओ, औ

आ, ई, ऊ ⇒ दीर्घ संधि स्वर
ए, ओ ⇒ गुण संधि स्वर
ऐ, औ ⇒ वृद्धि सन्धि स्वर

⇒ लम्बोष्ठ — ऊँट, शाखामृग — बन्दर

⇒ जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर स्वरो के भेद

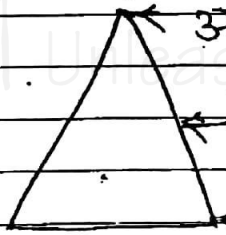

अग्र - इ, ई, ऋ, ए, ऐ
मध्य - अ — उदासीन स्वर
पश्च - आ, उ, ऊ, ओ, औ

1. अग्र स्वर ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे जिह्वा का (आगे का) अग्र भाग सक्रीय होता है तो उन्हे अग्र स्वर कहते है - (इ, ई, ऋ, ए, ऐ)

2. मध्य स्वर ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे जिह्वा का मध्य भाग

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ बीच का भाग सक्रीय होता है उन्हे मध्य स्वर कहते है। — (अ)

3 पश्च स्वर :- जिन स्वरो के उच्चारण मे जिह्वा का पीछे का भाग सक्रीय होते है उन्हे पश्च स्वर कहते है — आ, उ, ऊ, ओ, औ

4 ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरो के भेद

दो भेद होते है — उ, ऊ, ओ, औ
(1) वृत्ताकार / वृत्तमुखी
(2) अवृत्ताकार / अवृत्तमुखी
अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

1. वृत्ताकार ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे ओठो की आकृति गोल हो जाती है उन्हे वृत्तमुखी स्वर कहते है।
— —, ऊ, ओ, औ,

2. अवृत्ताकार ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण में ओष्ठो की आकृति गोल नही होकर अन्य किसी भी आकृति मे हो जाती है उन्हे अवृत्तमुखी स्वर कहते है।
— अ, आ, इ, ई, , ऋ ए ऐ

ओर — तरफ और = अन्य
उपसर्ग अपसर्ग / पर सर्ग।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5. मुखाकृति के आधार पर :-

बन्द → संवृत — इ, ई, उ, ऊ
→ अर्द्ध संवृत — ए, ओ
खुला → विवृत — आ
→ अर्द्ध विवृत — अ, ऐ, औ

: व्यंजन :-

→ जिन वर्णों के उच्चारण मे स्वरो की सहायता ली जाती है उन्हे व्यंजन कहते है। इनके उच्चारण मे स्वर तंत्रिकाओ में घर्षण होता है, कम्पन होता है और बल लगाया जाता है।

→ व्यंजनो को मुख्यत: तीन भागो मे बांटा जाता है
(1) स्पर्श / अदत → क से म तक पाँच वर्ग होते है — 25
(2) अन्त:स्थ → य, र, ल, व — 4
(3) ऊष्म → श, ष, स, ह — 4

→ (1) स्पर्श व्यंजन → जिन व्यंजनो के उच्चारण में स्वर तंत्रिकाओ मे सामान्य रूप मे घर्षण या कंपन होता है उन्हे स्पर्श व्यंजन कहते है।
— स्पर्श व्यंजनो की संख्या — 25 है
— (क से म तक)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ <2> अन्तस्थ व्यंजन ⇒ जिन व्यंजनों के उच्चारण में सामान्य से भी कम स्वर तंत्री कम्पन या घर्षण होता है उन्हे अन्तस्थ व्यंजन कहते है - 4 (य र ल व)

⇒ <3> ऊष्म का शाब्दिक अर्थ ⇒ गर्मी होता है जिन व्यंजनो के उच्चारण मे सबसे अधिक कंपन या घर्षण होता है उन्हे ऊष्म व्यंजन कहते है - 4 (श ष स ह)

⇒ उच्चारण स्थान

1 ⇒ कण्ठ ⇒ अ आ क वर्ग (क, ख, ग, घ ङ) ह इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

2 ⇒ तालु ⇒ इ, ई, च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ य श इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान तालु है।

3 ⇒ मूर्धा ⇒ ऋ ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) र ष इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

4 ⇒ दन्त ⇒ त वर्ग (त, थ, द, ध, न) ल, स, इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान दन्त है।
हिन्दी मे ल, स, न वर्त्स्य (मसूडा)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(5) ओष्ठ → उ, ऊ, प वर्ग (प, फ, ब, भ, म) इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

(6) नासिक और अपना-अपना वर्ग

ङ् — कण्ठ नासिक
ञ् — तालु नासिक
ण् — मुर्धा नासिक
न् — दन्त नासिक
म् — ओष्ठ नासिक

इन वर्णों का उच्चारण स्थान नासिक और अपना-अपना वर्ग है।

कण्ठ तालु — ए, ऐ
कण्ठोष्ठ — ओ, औ
दन्तोष्ठ — व
नासिका — (ं) अनुस्वार

उच्चारण आधार पर व्यंजनो के भेद

1. स्पर्शी → क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध प फ ब भ (16)
2. संघर्ष स्पर्शी → च छ, ज झ — (4)
3. संघर्षी → श, ष स ह — (4)
4. नासिक्य → ङ ञ ण न म — 5
5. अति क्षिप्त → ड़, ढ़ — 2
6. पार्श्विक → ल — 1
7. प्रकम्पित → र — 1

तत्सम - तद्भव

शब्दों को अलग-अलग रूपों में रखा जा रहा है-

1. विकास या उद्गम की दृष्टि से शब्द-भेद

इस दृष्टि से शब्दों को चार वर्गों में रखा गया है-

(क) तत्सम शब्द : वैसे शब्द, जो संस्कृत और हिंदी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित हैं। अंतर केवल इतना है कि संस्कृत भाषा में वे अपने विभक्ति-चिह्नों या प्रत्ययों से युक्त होते हैं और हिंदी में वे उनसे रहित। जैसे-

संस्कृत में कर्पूर : पर्यङ्कः फलम् ज्येष्ठ :
हिंदी में कर्पूर पर्यंक फल ज्येष्ठ

(ख) तद्भव शब्द : (उससे भव या उत्पन्न) वैसे शब्द, जो तत्सम से विकास करके बने हैं और कई रूपों में वे उनके (तत्सम के) समान नजर आते हैं। जैसे-

कर्पूर > कपूर
पर्यङ्क > पलंग
अग्नि > आग आदि।

नोट : नीचे तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची दी जा रही है। इन्हें देखें और समझने की कोशिश करें कि इनमें समानता-असमानता क्या है ?

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	इक्षु	ईख
कर्पूर	कपूर	गोधूम	गेहूँ
घोटक	घोडा	आम्र	आम
उलूक	उल्लूक	काष्ठ	काठ
ग्राम	गाँव	घृणा	घिन
अग्नि	आग	उष्ट्र	ऊँट
कोकिल	कोयल	गर्दभ	गदहा
चर्मकार	चमार	अंध	अंधा
कर्ण	कान	क्षेत्र	खेत
गंभीर	गहरा	चन्द्र	चाँद
ज्येष्ठ	जेठ	धान्य	धान
पत्र	पत्ता	पौष	पूस
भल्लूक	भालू	बट	श्वशुर

श्रेष्ठी	सेठ	सुभाग	सुहाग
सूची	सूई	हास्य	हँसी
कर्म	काम	कूप	कुँआ
स्नेह	नेह	कातर	कायर
लोक	लोग	शिक्षा	सीख
कुठार	कुल्हाडा	पक्व	पक्का
शाक	साग	इष्टिका	ईंट
गणना	गिनती	काक	काग
श्वश्रू	सास	भित्ति	भीत
विष्ठा	बीठ	शर्करा	शक्कर
कज्जल	काजल	अद्य	आज
दुर्बल	दुबला	उन्मना	अनमना
चित्रक	चीता	कुंभकार	कुम्हार
भिक्षा	भीख	कोटि	करोड
गात्र	गात	होंठ	ओष्ठ
अगम्य	अगम	मालिनी	मलिन
ताम्र	ताँबा	नव्य	नया
प्रस्तर	पत्थर	पौत्र	पोता
मृत्यु	मौत	शया	सेज
श्रृंगाल	सियार	स्तन	थन
स्वामी	साईं	मस्तक	माथा
चंचु	चोंच	हरिद्रा	हल्दी
प्रिय	पिया	अपूप	पूआ
कारवेल	करेला	श्रृंखला	सौंकल
मृतिका	मिट्टी	चतुष्पादिका	चौकी
पर्यंक	पलंग	अर्द्धतृतीय	ढाई
कूट	कूडा	शुष्क	सूखा

खर्पर	खपरा	क्षीर	खीर
चणक	चना	घट	घडा
पक्ष	पंख	काया	काय
अंगुष्ट	अँगूठा	सप्त	सात
अक्षत	अच्छत	भाग्नेय	भांजा
भ्रातृ	भाई	यजमान	जजमान
कुष्ठ	कोढ	धैर्य	धीरज
धूम्र	धुआँ	प्रतिच्छाया	परछाई
श्रावण	सावन	तैल	तेल
निद्रा	नींद	पीत	पीला
बधिर	बहरा	मित्र	मीत
शत	सौ	शिर	सिर
स्वर्णकार	सुनार	सूर्य	सूरज
हस्त	हाथ	अम्बा	अम्मा
कार्य	काज	जिह्वा	जीभ
आश्रय	आसरा	चूर्ण	चूना
सायम्	साँझ	त्वरित	तुरंत
चटका	चिडिया	सत्य	सच
सपत्नी	सौत	कपाट	किवाड
अष्ट	आठ	लक्ष	लाख
श्यामल	साँवला	लाक्षा	लाख
धरित्री	धरती	अक्षर	आखर
वायु	बयार	उच्च	ऊँचा
अवतार	औतार	कुक्कुर	कुकुर
याचक	जाचक	दधि	दही
उपवास	उपास	ग्राहक	ग्राहक
निर्वाह	निवाह	अट्टालिका	अटारी

आदित्यवार	एतवार	कुक्षि	कोख
दंत	दाँत	पद	पैर
पृष्ठ	पीठ	वानर	बन्दर
मुख	मुँह	श्वास	साँस
दश	दस	स्वर्ण	सोना
गौरी	गोरी	हस्ती	हाथी
तिक्त	तीता	चतुर्दश	चौदह
मयूर	मोर	केतक	केवडा
सर्षप	सरसों	स्वप्न	सपना
हास	हँसी	उद्धर्तन	उबटन
वचन	बैन	परशु	फरसा
सर्प	साँप	शलाका	सलाई
रात्रि	रात	वत्स	बच्चा
क्षुर	छूरा	दुग्ध	दूध
पूर्णिमा	पूनम	सर्व	सब
मौक्तिक	मोती	आशिष	आसीस
चक्रवाक	चकवा	श्वसुरालय	ससुराल
घृत	घी	कंकण	कंगन
गिद्ध	गीध	भक्त	भगत
कांचन	कंचन	गर्भिणी	गाभिन
यशोदा	जसोदा	चरित्र	चरित
अभीर	अहीर	फाल्गुन	फागुन
श्याली	साली	योद्धा	जोधा
पक्षी	पंछी	अंजलि	अँजुरी
दंतधावन	दातौन	जव	जौ
छिद्र	छेद	श्रृंगार	सिंगार
यश	जस	जमाता	जमाई

संज्ञा

परिभाषा :-

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है- 'सम् + ज्ञा' अर्थात् सम्यक् ज्ञान कराने वाला अतः किसी भी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, वर्ग, भाव स्थिति आदि का परिचय कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते है । संज्ञा का पर्याय है- नाम । किसी व्यक्ति (प्राणी), वस्तु स्थान, स्थिति, वर्ग, भाव, विचार के नाम को संज्ञा कहते है ।

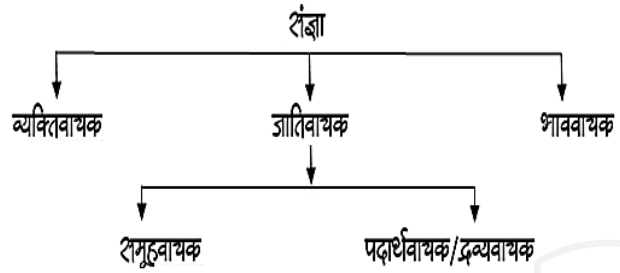

संज्ञा के भेदः-

व्यक्ति, गुण, वस्तु, भाव, स्थान आदि के आधार पर संज्ञा के तीन भेद माने गऐ है -

1.व्यक्तिवाचक संज्ञाः-

जो शब्द किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष या वस्तु विशेष का बोध कराते है ,उन्हे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है । जैसे - गौत्तम बुद्ध, हिमालय, ताजमहल, सीता, गंगा, जयपुर, रामायण आदि । व्यक्तिवाचक संज्ञा की विशेषता यह है कि (1) यह दुनिया मे एक ही होती है और (2) इसको हम पहले से जानने के आधार पर ही पहचान सकते है । गंगा/ताजमहल/रामायण को यदि हमने पहले से देखा है, समझा है तभी हम पहचान सकते है कि यह नदी तो गंगा है, यह भवन ताजमहल है, यह पुस्तक रामायण है, अचानक पहली बार देखने से नही।

2. जातिवाचक संज्ञा :-

जो शब्द किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति/वर्ग (Class) का बोध कराता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लडका, पर्वत, पुस्तक, घर, नगर, झरना, कुत्ता आदि ।

जातिवाचक संज्ञा तो एक वर्ग है और दुनिया मे उसकी इकाईयाँ अनेक होती है । लडका जातिवाचक संज्ञा है और दुनिया मे लडका वर्ग के अनेक विद्यमान है । जातिवाचक संज्ञा का आधार है- वस्तु आदि का समान गुण, और पहले से उन वर्ग गुणों का ज्ञान होने पर वैसे ही गुण अन्य किसी मे पहचान कर नई वस्तु/प्राणी को भी हम तुरन्त पहचान लेते है ।

प्रश्नः- नीचे लिखे शब्दों को व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा के रूप मे छांटिऐ-
ब्रह्मपुत्र, पत्थर, संगमरमर, ग्रेनाइट, फूल, कमल, हिमालय, अनाज, गेहूँ, कल्याणसोना (गेहूँ),
गाय, जर्सी गाय, फल आम, लँगडा आम ।

उत्तरः- ऊपर के शब्दों मे केवल ब्रह्मपुत्र और हिमालय व्यक्तिवाचक संज्ञाऐं है शेष सभी जातिवाचक है दुनिया मे व्यक्तिवाचक संज्ञा केवल एक होती है और जातिवाचक-अनेक ।

1. द्रव्यवाचक :-

किसी पदार्थ या द्रव्य (द्रव यानी बहने वाली वस्तु-पानी, तेल, आदि, द्रव्य यानी पदार्थ जैसे- मिट्टी, चीनी, तेल आदि) का बोध कराने वाला शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लोहा, सोना, घी, मिट्टी, तेल, दूध, लकडी, ऊन आदि ।

इन संज्ञाओं हम गिन नही सकते । दो लोहा, चार सोना आदि नही कर सकते, ये अगणनीय संज्ञाऐं है और ये मात्रात्मक या परिमाणात्मक है । इनमें से कुछ बहुवचन बनते है जैसे- मिट्टी,- मिट्टियाँ, लकडी-लकडियाँ आदि ।

2. समूहवाचक :-

ये संज्ञाऐं अनेक गणनीय संज्ञाओं के समूह से बनती है, और वे एकवचन एवं बहुवचन दोनो रूपों मे (सेना/सेनाऐं,/कक्षा/कक्षाऐं) प्रयुक्त हो सकती है । ये शब्द किसी व्यक्ति के वाचक न होकर समूह या समुदाय के वाचक होते है, जैसे- सेना, कक्षा, मंडली, जुलूस, परिवार, पुस्तकालय आदि ।

3. भाववाचक संज्ञा :-

जिन शब्दों से व्यक्तियों/पदार्थो के धर्म (Nature), गुण, दोष अवस्था (State), व्यापार (Activity), भाव स्वभाव या अवधारणा (Concept), विचार आदि का बोध होता है, वे भाववाचक संज्ञाऐं कहलाती है, जैसे कोमलता, बचपन, लम्बाई, बुढापा, शत्रुता, सलाह, मातृत्व, औचित्य, दासता, मित्रता आदि ।

भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती है :-

1. जातिवाचक संज्ञा से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)-

लडका–लडकपन, मित्र–मित्रता, पशु–पशुता, आदमी–आदमीयत, चिकित्सक–चिकित्सा, चोर–चोरी, तरूण–तरूणाई, पुरूष–पुरूषत्व, मर्द–मर्दानगी आदि ।

2. सर्वनाम से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)–
निज–निजत्व, अपना–अपनापन, सर्व–सर्वस्व, अहम्–अंहकार, मम्–ममता, ममत्व आदि ।
3. विशेषण से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)–
बूढा–बुढापा, चतुर–चतुरता/चतुराई, मीठा–मिठास, मधुर–मधुरता/माधुर्य, खट्टा–खटास/खट्टापन, अरूण–अरूणिमा, कंजूस–कंजूसी, उचित–औचित्य, लघु–लघुता, आलसी–आलस्य, विद्वान–विद्वता गरीब–गरीबी, भूखा–भूख, परिष्कार, धीर–धैर्य/धीरज आदि ।

4. क्रिया से संज्ञा – (विभिन्न कृत प्रत्यक्ष लगकर)–
चढना–चढाई, चलना–चाल, दौडना–दौड, सजाना–सजावट, उतारना–उतार, कमाना–कमाई, गाना–गान, जीना–जीवन, झुकना–झुकाव, खेलना–खेल, थकना–थकान, पहुंचना–पहुंच, जीतना–जीत, मिलाना–
मिलावट, हँसना–हँसी, पीना–पान आदि ।

5. <u>अव्यय से –</u> निकट–निकटता, दूर– दूरी, नीचे–नीचता, ऊपर–ऊपरी, धिक्–धिक्कार आदि ।
इस प्रकार ता, त्व, पन, ई, आई, आ, इयत, आहट, त, य आदि प्रत्यय लगाने से अन्य शब्द भाववाचक संज्ञाओं मे परिवर्तित हो जाते हैं । हिन्दी मे संज्ञाऐं लिंग, वचन तथा कारक द्वारा अपना रूप निर्धारण करती हैं । ये संज्ञा के विकारक तत्व कहलाते हैं ।